तृतीय अध्याय

संगीत भास्कर (प्रथम खंड)

Sangeet Bhaskar Part-I (Sixth Year)

ख्याल, ध्रुपद तथा तन्त्र वाद्य

(KHAYAL, DHRUPAD, INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: ४०० शास्त्र- २००, प्रथम-प्रश्न-पत्र-१००
(द्वितीय प्रश्न पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) प्रथम से पंचम वर्ष तक के सभी पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।

(२) प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक कालीन रागों के वर्गीकरण का महत्व और उनके विभिन्न प्रकारों की पारस्परिक तुलना।

(३) श्रुति-स्वर विभाजन, सारणी चतुष्टयी, मूर्च्छना का विस्तृत अध्ययन।

(४) भारतीय वृन्द संगीत पद्धति के ऊपर पाश्चात्य वाद्यों का प्रभाव।

(५) हिन्दुस्तानी संगीत पर पाश्चात्य वाद्यों का प्रभाव।

(६) तन्त्र वाद्य में आकर्ष, अपकर्ष, प्रहार, खटका, मुर्की, घसीट, अनुलोम विलोम, जोड, झाला आदि के सम्बन्ध में विशेष अध्ययन।

(७) संगीत के विभिन्न घरानों का परिचय एवं संगीत के प्रचार और उन्नति के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान।

(८) वाद्य वर्गीकरण, वाद्य के पार्श्व तन्त्र और स्वयंभूस्वरों का ज्ञान।

(९) तानपुरे के स्वरों के साथ आधुनिक स्वर स्थान की तुलना।
(१०) आधुनिक वाद्यों की त्रुटियां और संशोधन के उपाय।
(११) निबन्ध- (क) शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत।
(ख) राग और रस।
(ग) भाव, रस तथा लय।
(घ) संगीत विज्ञान।
(१२) जीवनी- पं. अहोबल,मियां शोरी तथा उस्ताद अमीर खां।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) वाद्य के जन्म का इतिहास तथा विद्यार्थी द्वारा चयन किये गये वाद्य की वादन शैली का ज्ञान।
(२) संगीत की उत्पति के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान।
(३) भारतीय गायन एवं वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।
(४) घरानों की गायकी की विशेषता, घरानों के पतन का कारण और उसके उत्थान के सम्बन्ध में विचार।
(५) संगीत के नियम सहित संगीत की कल्पना प्रवणता का अन्तर।
(६) संगीत के माध्यम में शब्द तरंग की भूमिका और उसकी विशेषता।
(७) प्रथम से षष्ठम वर्ष तक निर्धारित सारे रागों का विशेष अध्ययन रागों की समानता-विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व, आविर्भाव -तिरोभाव एवं न्यास स्वर के प्रयोग का विशेष ज्ञान। रागों के आलाप, ताल में लिखनें का अभ्यास। मसीदखानी और रजाखानी गत, विभिन्न लयों में तोड़ा और झाला लिखनें का अभ्यास।
(८) उत्तर भारतीय तालों को कर्नाटक ताल पद्धति में लिखनें का अभ्यास।
(९) भातखंडे और विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति में पाठ्यक्रम के विभिन्न गीतों के प्रकार एंव वाद्यों की गत लिखनें का अभ्यास।
(१०) प्रथम से षष्ठम वर्ष तक निर्धारित सभी तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।
(११) पाश्चात्य स्वर लेखन पद्धति का विशेष अध्ययन एवं भारतीय स्वर लिपि पर इसका प्रभाव।

क्रियात्मक (Practical)

(९) निम्नलिखित रागों में (पूर्ण गायकी के साथ) बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल जानना आवश्यक है-
पाठ्यक्रम में निर्धारित राग-
देवगिरी विलावल, यमनी विलावल, श्याम कल्याण, गोरख कल्याण अहीर भैरव, आभोगी कान्हड़ा, कौशी कान्हड़ा, चन्द्र कौंस, भटियार, गुर्जरी-तोडी विलासखानी तोडी, मधुवन्ती और बिहागड़ा।
(ध्रुपद गायन के परीक्षाथियों के लिए विभिन्न प्रकार के आलाप एवं ठाह दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड, बिआड और कुआड लयकारी के साथ ध्रुपद गायन जानना आवश्यक है।) (लक्ष्मी और पंचम सवारी (पन्द्रह मात्रा) ताल में कम से कम एक रचना)
-वाद्य विभाग के परीक्षाथियों को पूर्ण वादन शैली सहित मसीद खानी और रजाखानी गत जानना अनिवार्य।
(२) निम्नलिखित राग समूहों में मात्र छोटा ख्याल जानना आवश्यक
ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए केवल ध्रुपद गायन।
वाद्य विभाग परीक्षार्थियों के लिए केवल रजाखानी गत।
भैरव-बहार, गुणकली, भूपाल तोड़ी, ललित पच्चम, नन्द और आनन्द भैरव।
(३) निम्नलिखित राग समूहों के राग रूप प्रदर्शन की क्षमता। (ख्याल, ध्रुपद या गत की आवश्यकता नहीं है-)
शुक्ल बिलावल, नट बिलावल, खम्बावती, गन्धारी, भीम, नट हंस-ध्वनि धनाश्री और बागेश्री, कान्हड़ा।
(४) इस वर्ष के निर्धारित रागों में से किसी राग में विभिन्न लयकारी के साथ दो ध्रुपद और दो धमार जानना आवश्यक है-
ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए विभिन्न लयकारियों के साथ दो धमार और दो होरी।
(५) दो तराना, एक टप्पा, चतुरंग और एक त्रिवट जानना आवश्यक है।
(६) पूर्ण गायकी के साथ एक भजन दो ठुमरी तथा एक दादरा जानना आवश्यक है।
(७) पाठ्यक्रम में निर्धारित सारे रागों की समानता-विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व और आविर्भाव तिरोभाव प्रदर्शन की क्षमता।

(८) कठिन स्वर सुनकर राग निर्णय की क्षमता।
(९) पूर्व वर्षों के निर्धारित समस्त तालों की विभिन्न लयकारियों को ताली खाली दिखाकर बोलनें का अभ्यास।
(१०) **मंच प्रदर्शन**- इस वर्ष के निर्धारित रागों में से किसी भी राग को पूरी गायकी के साथ अथवा वादन शैली के साथ कम से कम ३० मिनट तक प्रदर्शित करना होगा।
टिप्पणी-पूर्व वर्षों का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भास्कर पूर्ण
Sangeet Bhaskar Final (Seventh Year)
ख्याल, ध्रुपद और तंत्रवाद्य
(KHAYAL, DHRUPAD, INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: ४०० शास्त्र- २००, द्वितीय प्रश्न पत्र-१००
(प्रथम प्रश्न-पत्र-१००,क्रियात्मक-१२५)
मंच-प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)
प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) पूर्व वर्षों के पाठ्यक्रम में निर्धारित सारे पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।
(२) गायकी और नायकी के बीच भेद और गायन तथा वादन में उनके सिद्धान्त।
(३) थाट समस्या और श्रुति समस्या के विषय में विशेष अध्ययन।
(४) मार्गी संगीत के सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञान।
(५) वैदिक तथा भरतकालीन संगीत का अध्ययन।
(६) नाद की विशेषता और विकास, Harmony में पाश्चात्य संगीत के मुख्य तत्व और उसकी उत्पति।
(७) जाति गायन का राग गायन में विकास।

(८) संगीत का कला पक्ष और भाव पक्ष।
(९) संगीत कला एवं अन्य ललित कलाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन।
(१०) भारतीय स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन एवं पाश्चात्य स्वर लिपि पद्धति का विशेष ज्ञान।
(११) गीत रचना तथा स्वरबद्ध करने की क्षमता।
(१२) जीवनी और संगीत क्षेत्र में योगदान-
उस्ताद मुश्ताक हुसैन खां,
अब्दुल करीम खां,
भास्कर राव बाखले,

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) भारतीय संगीत का सम्पूर्ण इतिहास।
(२) गायकी के विभिन्न प्रकार और गायकी के विशेष सिद्धान्त।
(३) शास्त्रीय संगीत के प्रचार में संगीत विद्यालयों का स्थान।
(४) मानव समाज में संगीत की भूमिका।
(५) श्रवणेन्द्रियों (Organ of Hearing) की विशेषता।
(६) मानव स्तर विषयक (Human Voice)।
(७) संगीत की एकात्मक सत्ता और भिन्न सत्ता
(८) संगीत का आकर्षण, प्रभाव तथा प्रतिक्रिया।
(९) भारतीय संगीत स्वर लिपि पद्धति की त्रुटियों एवं उनके सम्बन्ध में अपने विचार।
(१०) रागों की विस्तृत समालोचना। प्रथम से सप्तम वर्ष तक निर्धारित सारे रागों की समानता-विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व तथा आविर्भाव-तिरोभाव। राग में न्यास स्वरों का प्रयोग एवं महत्व, राग में विवादी स्वर का प्रयोग।
(११) पाठ्यक्रम में निर्धारित राग समूहों में बड़े और छोटे ख्याल (वाद्य के क्षेत्र में मसीदखानी और रजाखानी गत) तथा गीतों के प्रकारों को विष्णु दिगम्बर और भातखंडे स्वर-लिपि पद्धति में लिखनें का अभ्यास।
(१२) पूर्व वर्षों में निर्धारित तालों को कुआड़, बियाड़ और अन्य

लयकारियों में लिखनें की क्षमता।

(१३) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित रागों में बड़े ख्याल और छोटे ख्याल पूर्ण गायकी के साथ- ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के आलाप एवं ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन आड़ कुआड़ बियाड और लयकारी के साथ पूर्ण ध्रुपद जानना आवश्यक (ब्रह्म और रूद्रताल में कम से कम एक रचना आनिवार्य)।

- वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों के लिए सम्पूर्ण वादन शैली के साथ मसीदखानी और रजाखानी गत जानना आवश्यक है।

निर्धारित राग

-पूरिया कल्याण, नायकी कान्हड़ा, कोशी कान्हडा(मालकौश अंग) मेघ, मारू बिहाग, शुद्व सारंग, सूर मल्हार, रामदासी मल्हार, आनन्द भैरव, बसन्त बहार, जोग, कलावती, नारायणी।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में मात्र द्रुत ख्याल जानना आवश्यक है-

-ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए मात्र ध्रुपद गायन।

-वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों के लिए मात्र रजाखानी गत:-

सूहा, सुघराही, काफी कान्हडा, मधुवन्ती सारंग, झिझोटी, जोग, शिवरंजनी, पहाडी, नट मल्हार और जयन्त मल्हार।

(३) निम्नलिखित राग समूहों के मात्र राग रूप प्रदर्शन की क्षमता। (ख्याल या ध्रुपद या गत की आवश्यकता नहीं)

शिवमत भैरव, नट बिहाग, ललिता गौरी,देव गन्धार चांदनी केदार, बिलावल, कुकुभ, सरपर्दा, रेवा एवं जैत कल्याण।

(४) इस वर्ष के निर्धारित राग समूहों में से किसी राग में विभिन्न प्रकार के आलाप एवं विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ दो ध्रुपद तथा दो धमार पूर्ण गायकी के साथ गाना आवश्यक है।

-ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियो के लिए पूर्ण गायकी के साथ दो धमार और दो होरी।

(५) पूर्ण गायकी के साथ एक टप्पा, एक तराना एक भजन, एक चैती और एक कजरी जानना आवश्यक है।

(६) पूर्ण गायकी के साथ दो ठुमरी जानना आवश्यक।

(७) पाठयक्रम में निर्धारित संपूर्ण रागों की समानता विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व एवं आविभार्व, तिरोभाव प्रदर्शन की क्षमता।

(८) कठिन स्वर विस्तार सुनकर राग निर्णय की क्षमता।

(९) पूर्व वर्षों के पाठयक्रम में निर्धारित सारे तालों में विभिन्न लयकारी ताली खाली दिखाकर बोलनें का अभ्यास।

(१०) **मंच प्रदर्शन**- इस वर्ष में निर्धारित रागों में से किसी एक राग को गायकी के साथ कम से कम ३० मिनट तक प्रदर्शन करना होगा।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।